KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY

Website: www.kgcollege.ac.in Phone: 0481 2505212 Email: mail@kgcollege.ac.in

3.3.2 BOOKS AND CHAPTERS

2018-19

SL NO	NAME OF THE AUTHOR	BOOK
1	Dr A Priya	Samakaleen Hindi Kavitha Mein Bharatheeyatha
2	Dr A Priya	Samakaleen Kavitha Mein Pitha Ki Sakriyatmak Upasthithi
3	Dr A Priya	Hindi Bhasha, Sahithya aur Sanskrity
4	Dr A Priya	Hashiye Ka Samaj
5	Dr A Priya	Aadhunik Hindi Sahithya Ke Vividh Aayam
6	Dr A Priya	Paristhithik Sankat Aur Samakaleen Rachanakar
7	Dr A Priya	Naya Sahithya Naye Prashn
8	Dr A Priya	Ikkeesvim Sadi Ke Sahitya Ki Vaichariki
9	Dr Anila Kumari	Environmental Biology & Human Rights
10	Dr Anila Kumari, Renish Joseph & Vipin K Varughese	Environment Management & Human Rights
11	Dr Joji M Philip	Physical Fitness a Course in the Health Wellness and Life Skills

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

12	Roy Jose	Business Laws
13	Roy Jose	Principles and Methodology of Management
14	Roy Jose	BBA Semester Examiner
15	Anoop K R	S K Pottakkad Sahithya Lokathe Nithyasanchari

Prof.(Dr.) Remy P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

SINDHI COLLEGE
KNOWLEDGE IS POWER

जागृति
नव उन्मेष की ओर

हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्तमान में भारतीय सांस्कृतिक वैभव चुनौतियां व सुझाव

१८-१९ अगस्त २०१७

आयोजक

हिन्दी विभाग

सिन्धी महाविद्यालय

Affiliated to Bangalore University, NAAC Accredited

प्रायोजक: सिन्धी सेवा समिति

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Sindhi Group of Educational Institutions

(Sponsors : Sindhi Seva Samiti)

Sindhi Institute of Management
Sindhi College
Sindhi Evening Degree College
Sindhi Evening College
Sindhi Evening PU College
Sindhi High School, Hebbal
Sindhi School, KK Road
Sindhi Seva School
Sindhi Academy of Skills

KNOWLEDGE IS POWER

सिन्धी महाविद्यालय
प्रायोजक: सिन्धी सेवा समिति
केम्पापुरा, हेब्बाल, बैंगलोर -24, कर्नाटक.
सम्पर्क: 9035946328/9448166196
sindhihindi2017@gmail.com ; www.sindhicollege.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

ISBN 935268630-6
9 789352 686308

समकालीन हिन्दी कविता में भारतीयता

भारतीयता का अर्थ है–भारत की समग्र परंपरा,भारत–वर्ष का सामाजिक– सांस्कृतिक इतिहास,भारत वर्ष की ...धना, कला एवं साहित्य। अतः भारतीयता पूरे इतिहास का निचोड है। मानव जीवन–आदर्शों का, दर्शन का निचोड ... भारतीयता की सही पहचान अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाने पर ही संभव होगी। हमारे सांस्कृतिक विरासत ... परिचायक हैं–गाँव, कृषि और प्रकृति। भारत देश की लगभग दो–तिहाई आबादी गाँवों में ही निवास करती है। ... देश की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार गाँव की कृषि व्यवस्था है।

वर्तमान समय के भूमंडलीकरण की अपसंस्कृतियों के फैलाव के कारण देश की संस्कृति का अवमूल्यन हो रहा ... गाँव की संस्कृति, कृषक संस्कऋति एवं प्रकृति आज क्षरण के कगार पर खड़ी हैं। ये तीनों भारतीयता के अस्तित्व ... पहचान के लिए उपयोगी तत्व हैं। उत्तराधुनिक माहौल में इन तीन तत्वों की सुरक्षित प्रतिष्ठा ज़रूरी है। इन तीनों ... कृतियों की प्रतिष्ठा अब समाज के लिए चुनौती पूर्ण समस्या है। इसकी सुरक्षा के लिए हमारे सामने दो विकल्प ... एक है समाज के लोगों में सांस्कृतिक अवबोध जगाना और दूसरा है विरोधी परिवेश के जिरह प्रतिरोधी संस्कृति ... अपनाना। ऐसे त्रस्त चुनौतिपूर्ण परिवेश की चर्चा समकालीन हिन्दी कविता के क्षेत्र में हो रही है; जिसका उद्देश्य ... समाज में सांस्कृतिक अवबोध जगाना एवं प्रतिरोधात्मक मार्ग अपनाना। समकालीन हिन्दी कवि भारतीय संस्कृति ... बराबर रखने की कोशिश अपनी रचनाओं के तहत करते हैं।

आधुनिक मनुष्य संस्कृति से कोसों दूरी पर खड़ा है। भारतीय संस्कृति की आधार शिला है–प्रकृति। प्रकृति एक ...तिम सत्य है। भारतीयों ने प्रकृति या प्राकृतिक शक्तियों को दैविकता के अंतर्गत देखने का प्रयास किया है। अपने ... ओर के परिवेश में एक दैविकता को स्थान दिया। पर औद्योगीकरण के इस युग में हम अपने चारों ओर न तो ...संवेदना का अनुभव कर रहे हैं न तो मानवीयता का। भूमंडलीकरण की उपज औद्योगीकरण के कारण प्रकृति का ...षण होने लगा। प्राकृतिक शोषण के चित्र को राजेश जोशी की कविता में यों प्रस्तुत करती है–

"नदियों का नहीं, समुद्रों का नहीं, पेड़–पहाडों का नहीं

बाज़ारों का है यह समय।"[1]

इस प्रकार बाज़ारवादी संस्कृति ने पारिस्थितिकी की संरचना को बिगाड़ दिया है।

समकालीन समय आतंक से भरा है। सब कहीं हिंसात्मक वृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। मनुष्यों के बीच आत्मीयता ... मानवीयता का कोई भाव अब नहीं रहा। मतलबी मनुष्य बिना हिचक से बडी मात्रा में पेड़ों को काट देता है। ...नीय हरकतों के खिलाफ, पेड़ के प्रति आत्मीयता के भाव के साथ समकालीन कवि विमलकुमार 'वृक्ष और ...तिहास' नामक कविता में लिखते हैं–

"आखिर उसने दी है। कई मुसाफिरों को छाँह

उसकी डालियों में बसाया है पंछियों ने बसेरे

कोटरों में रहती आयी है गिलहरियाँ

उसके पत्तों की बानी है बीड़ियाँ।"[2]

औद्योगीकरण की प्रगति और विकास के नाम पर आज जो योजनाएँ अति शीघ्र बनायी जा रही हैं, जिससे पृथ्वी ... संतुलन बिगड़ने लगता है। इस असंतुलन के कारण पारिस्थितिक प्रदूषण, पेड़–पौधे, पशु–पक्षियों की विलुप्त ... की स्थिति भी उपस्थित होगी।

समकालीन कविता में पारिस्थितिक विनाश की चिंता उभरती हुई आती है। इसके दौरान पारिस्थितिकी को बचाने

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

पर बचा नहीं अब की बार / खेत का अंतिम

टुकडा / किसान होना भी उसका नहीं बचा।"[7]

समकालीन कविता किसनी संस्कृति को अपनी एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में स्वीकृत करती है। भारतीय संस्कृति की आधारशिला के रूप में कृषक संस्कृति की महत्ता का परिचय देने में समकालीन कविता सक्षम बनती है। अपने लक्ष्य के पूर्तीकरण के लिए कविता प्रतिरोधात्मक संस्कृति का मार्ग अपनाती है।

भूमंडलीकरण के वर्चस्व के कारण कई प्रकार की अपसम्स्कृतियाँ एवं साम्राज्यवादी ताकतें सब कहीं अपना हक जमा रही हैं। इसके कारण भारतीयता की पहचान संकटकारी बनती है। भारतीयता के अस्तित्व की पहचान समकटकारी बनती है। भारतीयता के अस्तित्व की पहचान के लिए उपयोगी संस्कृतियाँ हैं–प्रकृति के प्रति पूजा का भाव, ग्रामीण संस्कृति एवं कृषक संस्कृति। इन तीनों मुद्दों को भारतीयता के अस्तित्व के लिए सुरक्षित रखने का कर्तव्य बोध हम भारतीयों में होना चहिए। समकालीन कविता भारतीयता का पक्षधर बनकर अपने दायित्व को बखूबी निभा रही है। समकालीन कवि अपनी सृजनधर्मिता से समाज को भी सही दिशाबोध प्रदान करते हैं। इस प्रकार लोक संस्कृतियों के सहारे भारतीयता के अस्तित्व की पहचान पीढ़ी–दर–पीढ़ी संप्रेषित हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. राजेश जोशी–नेपथ्य में हँसी, पृ. 77
2. विमल कुमार–पानी का दुखडा, पृ.83
3. जनार्दन मिश्र–समकालीन भारतीय साहित्य 2015
4. कुमार अंबुज–गाँव का बीजगणित, पृ.53
5. एकांत श्रीवास्तव–अन्न हैं मेरे शब्द, पृ.27
6. लीलाधर मंडलोई–काल बाँका–तिरछा, पृ.25
7. निलय उपाध्याय–कटौती, पृ.31

डॉ. प्रिया ए.

****

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE ★ PAMPADY - 686 502 ★

ECOLOGIES OF THE
NEW
MATTER, MIND & BODY

Anthology of essays presented in the MESMAC International Conference 2018

MESMAC INTERNATIONAL CONFERENCES
www.mesmac.in

ISBN 978-93-5288-770-5

समकालीन हिन्दी साहित्य में विमर्श के विविध आयाम

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

MES Mampad College (Autonomous)
(Accredited by NAAC with A Grade)

4.

समकालीन कविता में पिता की सक्रियात्मक उपस्थिति

डॉ. प्रिया ए.
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम-686502

भारतीय सभ्यता का मूल रूप व आचरण सर्वप्रथम माता-पिता द्वारा दी गई प्रारंभिक शिक्षा पर ही निर्भर करता है। भारतीय समाज निर्माण में भी माता-पिता का एक विशिष्ट स्थान है। पिता का बच्चों के प्रति सुरक्षा, सहायता और जिम्मेदारी वाला रवैया होता है। बचपन से हम सभी अपनी जिन्दगी में लगातार 'माता-पिता-गुरु-ईश्वर' वाला मुहावरा सुनते रहते हैं। 'पिता' परिवार के सभी सदस्यों के लिए संपूर्णता का पर्यायवाची शब्द है। एक जीवंत सच्चाई है। भारतीय पारिवारिक जीवन की इस गहन आँतरिक यथार्थ को समकालीन कविता बयान करती है। समकालीन कवियों ने भिन्न-भिन्न आयामों से अपनी रचनाओं में पिता के प्रति संवेदनात्मक अभिव्यक्ति को दर्ज किया है।

समकालीन कवयित्री ज्योति चावला ने 'पिता के जाने पर' नामक कविता में पिता की अनुपस्थिति एवं अनुपस्थिति के कारण होनेवाली अपूर्णता को शब्दबद्ध किया है-

"पिता को न जाने कितने मौकों और कितने पड़ावों पर
अनुपस्थित पाया है मैंने
उनकी अनुपस्थिति ने अकेला किया है माँ को
और रीता किया है सम्बन्धों को
उनकी अनुपस्थिति से हमारे कई सम्बोधन छूट गए अधूरे ही
अगर होते पिता तो बेटे के ब्याह पर
होते माँ की आँखों में आँसू की जगह पैरों में थिरकन
होते पिता तो होता एक कंधा माँ के लिए भी
पिता किसी परिवार के लिए केवल एक पुरुषवाची संज्ञा ही नहीं
बल्कि एक संपूर्णता हैं।"[1]

श्रम को सौंदर्य माननेवाले एक पिता का चित्र समकालीन कवि डॉ. ए. अरविंदाक्षन ने 'पिता - एक रेखाचित्र' नामक कविता में व्यक्त किया है।

"दिन में / जब सूरज तपना शुरू होता है
पसीने से तर / एक किसान घर लौट आता है
भूख के बावजूद / वह अपने बैलों के पास जाता है
उन्हें चारा देना भूलता नहीं
देर तक उन्हें प्यार देता रहता है।
.....
सबको खिलाने-पिलाने का आनंद लिए
बेफ्रिक जो बैठा है / वह मेरे पिता है।"[2]

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

ISBN 978-93-84110-80-2

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की कार्यवाही

हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति

संपादक

प्रो. के. के. वेलायुधन

प्रो. वी. जी. गोपालकृष्णन

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

अस्मिता 2018
27,28,29 दिसंबर

दक्षिण भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

केदारनाथ सिंह और ओ.एन.वी. कुरुप की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन

(रचनालोक के प्रतिमानों के आधार पर)

डॉ. प्रिया ए.

तुलनात्मक साहित्य में दो या अधिक भिन्न भाषाई, राष्ट्रीय या साँस्कृतिक समूहों के साहित्य का अध्ययन किया जाता है। तुलना इस अध्ययन का मुख्य अंग है। दो भिन्न भाषाओं के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पाठकों को व्यापक दृष्टि प्रदान करता है। ऐसी व्यापकता आज के विश्व-मनुष्य की आवश्यकता है। वर्तमान समय में ऐसे एक साहित्य की विशेष ज़रूरत भी है। अपने लेख के लिए मैं ने हिन्दी और मलयालम के दो सशक्त कवि एवं ज्ञानपीठ विजेताओं के रचनालोक को विषय बनाया है। इन दोनों कवियों की रचनाओं समान रूप से कुछ विशेष प्रतिमान उभरकर आते हैं। रचनालोक में प्रयुक्त समान ढंग की भावना ही ऐसे समान प्रतिमानों को गढ़ने का कारण बनती है।

"इस समय जबकि हम/ यानी लाखों वर्ष पुराना वह/ और पचहत्तरवर्षी मैं/ दोनों एक ढाल से उतर रहे हैं/
मैं उसे जानता हूँ/ जैसे एक समकालीन जानता है /दूसरे समकालीन को।"[1]

केदारनाथ सिंह का आखिरी काव्य संकलन है - 'सृष्टि पर पहरा'। इस संकलन की पहली कविता है - सूर्य : 2011। इस कविता में कवि ने सूर्य को ताप और ऊर्जा का स्वामी माना है। कवि का सूर्य के साथ आत्मीय संबन्ध इस कविता में स्पष्ट होता है। 'सूर्य को जानने' का अर्थ है एक समकालीन का दूसरे समकालीन को जानना है।

इन पंक्तियों में कवि मानवीय संबन्धों की ऊष्मा का वर्णन करते हैं। कवि सूर्य को अपना समकालीन मानते हैं। वे वर्तमान समय में घटते हुए मानवीय संबन्धों को पुनः प्रतिष्ठित करने की उम्मीद करते हैं। इसी उम्मीद को वे अपनी कविता के माध्यम से दर्ज करते हैं।

मलयालम के ओ.एन.वी. कुरुप ने भी 'सूर्यगीत' नामक कविता का सृजन किया है। अपनी इस कविता में उन्होंने सूर्य और मनुष्य के बीच का गहरा संबन्ध स्पष्ट किया है। प्रकृति और मनुष्य के बीच के सातत्य इस कविता में प्रस्तुत है। कवि मानते हैं कि जगत के सभी चर-अचर सूर्य से ही उद्भूत होते हैं। सूर्य ही सभी जीवजगत् का परिचायक होता है। 'सौर्ययूथ' की परिकल्पना में भी सूर्य ही केन्द्र में आता है। जीवन के अंत में सभी जीव सूर्य में ही मिल जाते हैं। अंतिम पंक्तियों में वे कहते हैं-

"मैं इस पृथ्वी पर खड़ा हूँ/हे सूर्य, तुम मेरे/ शब्दों की ज्वाला में/जल रहे हो/ तुम मेरे शब्द बनकर जल रहे हो।"[2]

इन पंक्तियों में कवि एवं सूर्य के बीच का आत्मीय संबन्ध व्यक्त होता है। केदारनाथ सिंह ने जितनी ऊष्मा से सूर्य को अपनी कविता में स्थान दिया है, उतने ही लगाव एवं गहराई से ओ.एन.वी. कुरुप ने भी 'सूर्य' को अपनी कविता में चित्रित किया है।

केदारनाथ सिंह की एक कविता है 'पृथ्वी रहेगी'। इस कविता में उन्होंने पृथ्वी को अमर माना है। पृथ्वी की सुन्दरता की निरंतरता को बनाए रखने की कोशिश इनकी कविता में विद्यमान है। प्राकृतिक बिम्बों को मानव जीवन से जोड़कर प्रकृति और मानव के बीच सह अस्तित्व की भावना को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

"मुझे विश्वास है/यह पृथ्वी/ यदि और कहीं नहीं तो मेरी हड्डियों में/ यह रहेगी जैसे पेड़ के तने में/रहते हैं दीमक
यह रहेगी प्रलय के बाद भी मेरे अन्दर/ यदि और कहीं नहीं तो मेरी ज़बान/ और मेरी नश्वरता में/यह रहेगी।"[3]

कवि सशक्त रूप में विश्वास करते हैं कि पृथ्वी रहेगी। मनुष्य का जन्म तो नश्वर है, फिर भी पृथ्वी की अनश्वरता पर कवि ज़ोर देते हैं। अतः नश्वरता में भी अनश्वरता को ढूँढ़ने के दार्शनिक दृष्टिकोण यहाँ उपस्थित है।

ओ.एन.वी. कुरुप ने भी मलयालम में 'भूमि' नामक कविता में इसी प्रकार भूमि के सौंदर्य भावना का वर्णन करते हुए लिखा है कि

"दिन-ब-दिन/आयु बढ़ती है/ पर पृथ्वी रूपी माँ/ सदा तरुणाई का तान ही कसती है।"[4]

इस कविता के अंत में कवि ने नश्वर मानव जीवन से अनश्वर प्राकृतिक सुन्दरता का तालमेल किया है। मानवजीवन और प्रकृति के सुन्दर राग-विराग की भावना को उसी कविता के अंत में यों लिखते हैं-

"पृथ्वी के अनश्वरता के संगीत से/ हम नश्वर नाद कणों को भरते हैं
निश्चित क्रम से जीवन के स्वरविन्यास को/ अपूर्णता से पूर्णता में भरने की कोशिश करते हैं।"[5]

नश्वर मानव जीवन को प्राकृतिक उपादानों से अश्वरता में परिवर्तित करने की कोशिश इन पंक्तियों में देख सकते हैं। इन दोनों कवियों में एक ओर पारिस्थितिकी के सौन्दर्य को सुरक्षित रखने की आकांक्षा रही है और दूसरी ओर बड़े तादाद में होनेवाले प्राकृतिक शोषण तंत्र से निराशा भी है।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

हाशिए का समाज

डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव
डॉ. ज़हीरूद्दिन रफियोद्दिन पठान

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

परिकल्पना
बी-7, सरस्वती काम्प्लेक्स, सुभाष चौक
लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110092, मो.: 9968084132
e-mail : parikalpana.delhi2016@gmail.com

₹ 325/-
ISBN 978-93-87859-08-1
9 789387 859081

निर्मला पुतुल की कविताएँ : आदिवासी जीवन का सशक्त दस्तावेज

–डॉ. प्रिया ए.

जनजातियों के लिए 'आदिवासी' शब्द का प्रयोग आम प्रचलन में है। 'आदिवासी' शब्द का अर्थ है–'मूल निवासी'। आदिवासियों को भारत का मूल निवासी कह सकते हैं। तमाम आकर्षक योजनाओं के अनुसार भारत देश में असमान विकास हुआ, पर आदिवासी क्षेत्र अंधेरे में ही रह गये। क्योंकि आदिवासी वर्ग तो सदैव हाशिए पर रहे। वैश्वीकरण के इस युग में तकनीकी और औद्योगिकीकरण की सर्वव्यापी बाजार व्यवस्था में आदिवासी समाज अपने जल, जंगल, जमीन, पर्यावरण, अस्मिता और संस्कृति के बचाव के लिए जूझ रहे हैं।

हिन्दी साहित्य में आदिवासी समाज की विडंबनात्मक हालत को यथार्थवादी एवं आदर्शवादी दृष्टिकोण से अभिव्यक्त किया गया है। अतः हिन्दी साहित्य में आदिवासी साहित्य भी समाहित किया गया। आदिवासी साहित्य वह साहित्य है जो आदिवासियों द्वारा, आदिवासियों के लिए एवं आदिवासियों पर लिखा गया हो। यह किसी भी जनजाति का हो सकता है। वर्तमान समय में हिन्दी कविता के क्षेत्र में हाशिए कृत आदिवासी समाज को मुख्यधारा में लाने का प्रयास अनेक कवियों द्वारा हो रहा है। निर्मला पुतुल हिन्दी कविता के क्षेत्र में एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। समकालीन हिन्दी कविता के क्षेत्र में झारखंड की संताली भाषा की कवयित्री निर्मला पुतुल ने अपनी कविताओं से देश भर को चौंका दिया है। उनकी कविताओं में झारखंड ही नहीं, पूरे देश का आदिवासी इतिहास उभर आता है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में सरकार और कॉर्पोरेट के गठबंधन ने आदिवासियों के जल, जंगल और जमीन को जबरदस्ती हड़पकर पूँजीपतियों और उद्योगपतियों को हस्तान्तरित कर दिया है। इसके प्रतिरोध में निर्मला पुतुल आवाज उठाती हैं–

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

आधुनिक हिंदी साहित्य के विविध आयाम

संपादक : डॉ. शब्बीर बाशा

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

डॉ शब्बीर बाशा
एम ए (हिन्दी), मद्रास विश्वविद्यालय
बी एड (हिन्दी), दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
एम फिल (हिन्दी), मदुरै कामराज विश्वविद्यालय
पी एच डी (हिन्दी), दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
शिक्षण अनुभव : 32 वर्ष
सम्प्रति : प्रोफसर, हिन्दी विभाग, श्री भगवान महावीर जैन कॉलेज, के.जी.एफ. – 563 122 कर्नाटक

अनुक्रम

• साहित्य और संस्कृति का संकट •हिन्दी के प्रचार–प्रसार में इलेक्ट्रानिक अध्ययन की भूमिका •हिंदी कहानियों में दलितों की सामाजिक समस्याएँ • हिन्दी साहित्य – लघु उपन्यासों में नारी • 'शम्बूक' काव्य में आदिवासियों का चित्रण • इक्कीसवीं सदी में हिन्दी भाषा का स्वरूप • हिन्दी में दलित साहित्य • दलित विमर्श की अवधारणा • गुरुकुल से गुगल तक • हिन्दी में दलित साहित्य • भारत में हिंदी की वर्तमान स्थिति • भारत में राष्ट्रभाषा की समस्या और हिन्दी • आत्म की धरती में चित्रित भारतीय संस्कृति की झलक • 'जूठन'–दलित आत्मकथा की सार्थक उपस्थिति • सूरजपाल चौहान की कविताओं में व्यक्त दलित–विमर्श • भारत में आज हिंदी की स्थिति • आज भारत में गुरु और शिष्य की परम्परा • वर्तमान भारत में गुरु–शिष्य परम्परा–इतिहास बनाम आज का यथार्थ • भारत में खादय प्रसंस्करण उद्योग • विश्व में हिंदी भाषा का महत्व • भारत में खाद्य उद्योग का भविष्य • आधुनिक हिंदी साहित्य और संस्कृति • रैदास के साहित्य में दलित विमर्श • विकास की ओर अग्रसर : भारतीय खाद्य प्रसंस्करण • हिंदी की वर्तमान स्थिति • महिला कथाकारों में दलित नारी संघर्ष • भारत में खाद्य उद्योग का भविष्य • भारत संस्कृति में सामाजिक व्यवस्था • हिन्दी दिवस आज की दृष्टि में • दक्षिण भारत में हिन्दी की गति–विधियाँ • हिन्दी का भविष्य • हिन्दी कविताओं में दलित जीवन संघर्ष • हिन्दी और भारतीय भाषाओं का अंतःसंबंध • अशिक्षा की 'बदबू' • 'सलाम' हाशिएकृत जीवन का यथार्थ चित्र • भारत में अब हिन्दी का वर्तमान स्थिति • हिंदी का भविष्य • आधुनिक हिंदी साहित्य और संस्कृति • हिन्दी दलित साहित्य का स्वरुप • हिंदी कथा साहित्य में उत्तराधुनिकता में एक की तलाश • भारत के संदर्भ में व्यक्तित्व को निर्धारित करने वाले तत्व •हिन्दी साहित्य की कहानियों में आदिवासी जीवन का यथार्थ • निराला : काव्य में मानवीय चेतना • दलित साहित्य • दलित साहित्य : भाषिक संरचना • हिन्दी भाषा की वर्तमान स्थिति • हिन्दी साहित्य में दलित चेतना • हिन्दी में दलित साहित्य • मुस्लिम उपन्यासकारों में युग चेतना

ST. GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

माया प्रकाशन
(पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता)
6A/540, II-फ्लोर आवास विकास हंसपुरम्
नौबस्ता, कानपुर-208021
मो० : 07618879266, 09451877266
E-mail : mayaprakashankanpur@gmail.com

ISBN 978-81-934201-8-8
9 788193 420188 >
₹ 650/-

13

आत्म की धरती में चित्रित भारतीय संस्कृति की झलक

मानव जीवन का विकास यात्रा से ही शुरू होता है। जीवन और साहित्य का अटूट संबन्ध है। भ्रमण' ज्ञान का भंडार है। भारतेन्दु युग से लेकर अब तक हिन्दी में यात्रा वृत्तों के लेखन-प्रकाशन का क्रम निरंतर चलता रहा है। यात्रावृत्तान्त के तहत मनुष्य ने पर्यटन के सुन्दर अनुभव शब्दों में उतारने का प्रयास किये, इसी कारण यात्रा साहित्य का विकास हुआ। '' 'यात्रा वृत्तान्त' माने देखे गये स्थानों का केवल विवरण ही नहीं, बल्कि यात्रा के दौरान दृश्यों एवं स्थलों और साथ भोगी हुई ज़िन्दगी की क्रमबद्ध भाव प्रवण प्रस्तुति है।"[1] 'यात्रा' का शाब्दिक अर्थ है - एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। प्रकृति एवं मानव जीवन के प्रति जिज्ञासा एवं कौतूहल के फलस्वरूप मनुष्य में यायावरी प्रवृत्ति का विकास हुआ। यात्रा साहित्य एक ऐसी साहित्य विधा है, जो मनुष्य में नये ज्ञान का प्रवेश कराती है। भारत में यात्रा साहित्य परम्परा बहुत प्राचीन है।

कवि, आलोचक और संपादक के रूप में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का नाम हिन्दी पाठकों के लिए सुपरिचित है। 'आत्म की धरती' नामक यह पुस्तक एक यात्रा-वृत्त मात्र नहीं बल्कि एक गंभीर विचारक का गंभीर चिंतन है। पत्र शैली में लिखे गये ये यात्रा संस्मरण पन्द्रह शीर्षकों में विभक्त हैं जो अत्यंत सहज ढंग से देखे गए स्थानों, व्यक्तियों और संस्कृतियों को रूपायित करते हैं। ये कहीं भावुक नहीं होते, मोहाविष्ट नहीं होते बल्कि सजग आँखों से चीज़ों को देखते और तटस्थ अंदाज में उनका विश्लेषण करते हैं। इन संस्मरणों में भारत का इतिहास, भूगोल, उसकी आकृति, प्रकृति, संस्कृति और विकृति - सब कुछ आकलित है। लेखक ने एक ओर प्रकृति के मनोहारी दृश्यों का चित्रण किया है, वहीं दूसरी ओर उनके पीछे की कुरूपताओं का भी। कश्मीर से कन्याकुमारी और पुरी से द्वारका तक का वैविध्यपूर्ण परिवेश, जीवन और बहुरंगी संस्कृति इन संस्मरणों में साकार है। इन संस्मरणों में एक संवेदनशील प्रकृति-प्रेमी पर्यटक और एक गंभीर संस्कृति-प्रेमी विचारक के रूप में साथ दिखाई पड़ते हैं, साथ ही एक विशिष्ट सर्जनात्मक गद्यकार के भी।

भारत कोई एक देश नहीं, यह अनेक देशों, अनेक संस्कृतियों, अनेक विचारों का एक महासागर है। एक ओर रेगिस्तान, दूसरी ओर बर्फीली घाटियाँ, एक ओर [illegible] दूसरी ओर हिमालय, एक ओर भयानक गर्मी दूसरी ओर भयानक ठंड, एक ओर सूखा दूसरी

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

दृष्टियों से उत्तम और सुन्दर बनाने के लिए ही संस्कृति परिश्रम करती है। संस्कृति के तहत मानव अपना व्यक्तित्व स्थापित करता है। अपने देश की संस्कृति को बनाये रखने के लिए दर्शन, आध्यात्मिकता, नीति और धर्म महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। ''संस्कृति के निर्माण में मस्तिष्क के अलावा हृदय पक्ष का भी योग रहता है। हृदय से उत्पन्न होने के कारण संस्कृति में कल्पना का समावेश होता है। इस कल्पनात्मक संस्कृति को साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।''[1] विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने 'आत्म की धरती' नामक अपनी रचना में इन्हीं तथ्यों को स्थान दिया है। भारत के उत्तर से लेकर दक्षिण तक की बहुमूल्य संस्कृति का संप्रेषण ही उनका लक्ष्य रहा है।

हिन्दी साहित्य की अकाल्पनिक गद्य विधाओं में यात्रा साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। यात्रावृत्त को सूक्ष्म निरीक्षण सहजता, कल्पना प्रवणता से युक्त होना चाहिए। यात्रा साहित्य लेखक शब्दों की चित्रात्मकता से उस स्थल का ऐसा सजीव चित्रण करता है कि वह स्थल या दृश्य पाठक के सामने मूर्तिमान हो उठते हैं, ऐसा लगता है जैसे स्वयं अपनी आँखों से सब कुछ देख रहे हो। यात्रा साहित्य की इसी विशेषता को आत्मसात करके विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने यात्रानुभवों को इस रचना में लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है। भारतीय संस्कृति के वैविध्य को, उनकी सामंजस्य भावना को हम प्रस्तुत रचना में अनुभव कर सकते हैं। यह रचना भारतीय संस्कृति के धरोहर के रूप में आनेवाली पीढ़ी को ज़रूर सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत कराएगी।

मूल ग्रन्थ

आत्म की धरती - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

संदर्भ ग्रन्थ

1. यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. सुरेन्द्र कुमार - पृ. 11
2. भारतीय संस्कृति - नरेन्द्र मोहन - पृ. 37
3. भारतीय संस्कृति - शिवदत्त ज्ञानी - पृ. 25

डॉ. प्रिया ए.
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम
केरल-686502
मो : 9447294227

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

पारिस्थितिक संकट और समकालीन रचनाकार

सम्पादक
डॉ. उषा नायर

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी अस्मिता के संकट एवं संघर्ष

•

डॉ. प्रिया ए.

वैश्वीकरण के इस युग में तकनीकी और औद्योगीकरण की सर्वव्यापी बाज़ार व्यवस्था में आज हम जीवन बिताते हैं। तमाम आकर्षक योजनाओं के कारण हमारे देश का असमान विकास हुआ। विकास के कुछ शिखर ज़रूर चमक उठे, पर विडम्बनात्मक बात यह है कि बाकी क्षेत्र आज भी अन्धेरे में पड़े हैं। विकास प्रतिमानों की मुख्यधारा में गाँव की गणना कभी नहीं आयी। गाँव में बसने वाले, भारत के मूल निवासी आदिवासी वर्ग का जीवन हमेशा हाशिए पर ही रहा है। "भूमण्डलीकरण की उपज उदारीकरण, निजीकरण, बाज़ारीकरण की मिलीभगत की कूटनीति अब इन पर हावी हो रही है। इसके तहत आदिवासी वर्ग की ज़िन्दगी तबाह हो रही है।"[1] निजीकरण के चलते आदिवासियों से उनकी ज़मीनें छीनी जा रही हैं। इसकी वज़ह से आदिवासी समाज पर कुप्रभाव पड़ा है। अतः नये पूँजीवाद, वर्चस्ववादी सत्ता की संरचनाएँ, भूमण्डलीकरण और कॉरपोरेट पूँजीकरण ने मिलकर इनके समक्ष एक विकट स्थिति उपस्थित की है। इस प्रकार नयी सभ्यता या नयी आर्थिक नीतियों से उत्पन्न कई प्रकार के संकट आज उनके सामने चुनौती बनकर खड़े हैं। ऐसी विद्रूपात्मक हालत को विनोदकुमार शुक्ल अपनी कविता 'जो प्रकृति के सबसे निकट हैं' में दर्ज करते हैं–"जो प्रकृति के सबसे निकट हैं/जंगल उनका है/ आदिवासी जंगल के सबसे निकट हैं/इसलिए जंगल उनका है/अब उनके बेदख़ल होने का समय है/यह वही समय है/जब आकाश से पहले/एक तारा बेदख़ल होगा/जब पेड़ से/पक्षी बेदख़ल होगा/आकाश से चाँदनी बेदख़ल होगी/जब जंगल से आदिवासी बेदख़ल होंगे।"[2]

नया साहित्य नये प्रश्न

सम्पादक

डॉ. सुमा एस.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

आलोचना/Criticism

www.vaniprakashan.com

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से
Vani Prakashan's signature motif is created by
Artist Maqbool Fida Husain

e
E-book
Available

ISBN : 978-93-88684-27-9

9 789388 684279

वर्तिका नन्दा की कविता में नारी जीवन का कारुणिक यथार्थ

•

डॉ. प्रिया ए.

समकालीन कवयित्री वर्तिका नन्दा ने अपनी कविताओं में स्त्री जीवन की कारुणिकता को शब्दबद्ध किया है। वे एक मीडियाकर्मी शिक्षक और चिन्तक के रूप में विख्यात हैं। वे महिला सशक्तीकरण के लिए जुझारू एम्बेसेडर हैं। वर्तिका नन्दा को 2014 में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्त्री शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके तीन महत्त्वपूर्ण काव्य संकलन प्रकाशित हुए हैं–'तिनका तिनका तिहाड़' (2013)–तिहाड़ की महिला कैदियों की कविताओं का अनूठा संग्रह है। (इसी शीर्षक से एक गाना भी उन्होंने लिखा है। वह गाना कैदियों द्वारा गाया है। दूसरा काव्य संग्रह है–थी...हूँ...रहूँगी...(2012)–जो घरेलू हिंसा पर देश का पहला कविता संग्रह है। उनका तीसरा काव्य–रानियाँ सब जानती हैं (2015)। इन दोनों काव्य–संग्रहों में महिला अपराध पर केन्द्रित कविताएँ लिखी हैं।

वर्तिका नन्दा की कविता में इस ग्रह के हर हिस्से में किसी–न–किसी अपराध के शिकार होने वाली औरत की जीवनगाथा विद्यमान हैं। उनका मानना है कि ज्यादा बड़ा अपराध घर के भीतर ही होता है जो अमूमन खबर की आँख से अछूता रहता है। अतः वर्तिका नन्दा की कविताएँ देहरी के अन्दर की पीड़ादायक कहानी सुनाती है। 'नानकपुरा [illegible] भूलता' नामक कविता ऐसी जीवन कहानी को परिभाषित करती है–

'राशन या पानी की कतार में खड़े लोग नहीं हैं [illegible]
यह किसी अपने से मिली थकान, हताशा, उदासी, अप[illegible] कतार है

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

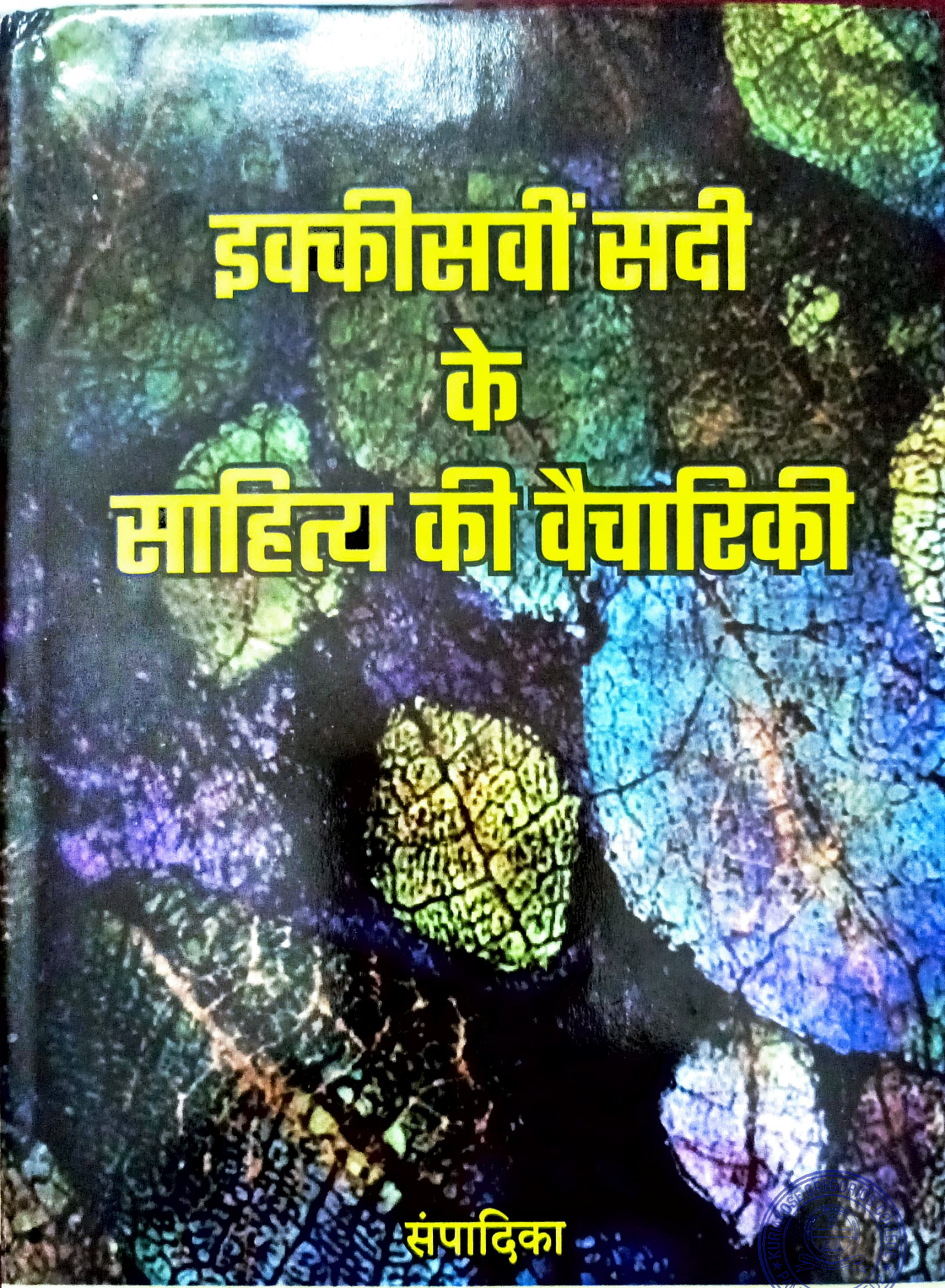
इक्कीसवीं सदी
के
साहित्य की वैचारिकी
संपादिका
डॉ. के. श्रीलता विष्णु

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

अप्र
अमन प्रकाशन
104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-208012 (उ.प्र.)
फोन : 0512-2543480, (फैक्स) 0512-2543480
मो. : 08090453647, 09839218516
ईमेल : amanprakashan0512@gmail.com
वेबसाइट : www.amanprakashan.com

₹ 495/-
ISBN : 978-93-86604-94-1

समकालीन हिन्दी कविता में अंकित बाजार का दबाव

– डॉ. प्रिया ए.

वर्तमान समय में दुनिया के सामने कुछ ऐसी नव-औपनिवेशिक ताकतें उभर रही हैं, जिनके काम के क्षेत्र, आयाम और प्रभाव दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं। वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, बाज़ारवाद जैसी नव-औपनिवेशिक शक्तियाँ तीसरी दुनिया को, विकासशील देशों को अपने शिकंजे में फँसाने की कोशिश कर रही है। यह बाजार की ताकत है। बाजार मानव समाज का अभिन्न अंग है। इसके कारण मानव जीवन पहले भी असंभव था और आज भी असंभव है। पर आज का इस नव उपनिवेशवादी युग में बाज़ार का रूप दमनकारी, विकृत एवं भयावह हो रहा है। यह पूँजीवादी व्यवस्था का नया रूप है। वास्तव में यह बाज़ारवाद पूँजीवादी वर्ग द्वारा अपने देश के विकास के लिए बनायी गयी कुंजी है। आगे चलकर नव-पूँजीपतियों की यह दमनकारी रवैया बाज़ार की ताकत बन रही है। यहीं से शोषण दमन और दबाव का सब से भयानक रूप शुरू होता है।

आज के इस जटिल समय के दहशत को समकालीन कवि उमाशंकर चौधरी यों शब्दबद्ध करते हैं- "इतिहास में यह समय / जितना विकास के लिए दर्ज होगा/ उससे अधिक विडंबनाओं के लिए।"[1]

नव साम्राज्यवादी ताकतों ने सब कहीं अपनी पकड़ मजबूत कर रखी है। यहाँ तक कि हमारी रोजमर्रा ज़िन्दगी में भी दखलंदाज करके साये के समान नव-औपनिवेशिक तथ्य हमारे सामने उपस्थित है। ऐसी बाज़ारवादी ताकत हमारी संस्कृति पर बुरी तरह हमला कर रही है। इसका बयान दे रही है - समकालीन हिन्दी कवि - डॉ. ए. अरविंदाक्षन की कविता 'बेहतर कहानियाँ'। पंक्तियाँ यों हैं- "बचपन में / हमने बहुत सी कहानियाँ सुनी हैं / सब से बेहतर कहानियाँ वे थीं / जिनमें राक्षस पात्र बनकर आते थे / वे राक्षस थे / इन्सान बनने का बहाना उन्होंने कभी नहीं किया / वे राक्षस थे / सत्य हरिश्चंद्र का बहाना उन्होंने नहीं किया / वे बिल्कुल राक्षस थे।"[2] यहाँ 'राक्षस' शब्द कवि ने बाज़ारवादी अपसंस्कृति के लिए प्रयुक्त किया है। यह बाज़ारीकरण की प्रवृत्ति मनुष्य को मनुष्यत्व से दूर एवं दानवता के निकट खींचकर ले जाती है।

वैश्वीकरण एक ओर मानवीय एकीकरण को अपनाता है और दूसरी ओर पूरे

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

ZOOLOGICAL SOCIETY OF KERALA
TEXT BOOK SERIES

ENVIRONMENTAL BIOLOGY AND HUMAN RIGHTS

Environmental Biology and Human Rights

Editor

Dr. Anila Kumary K.S.

Revised Edition: May 2019

Published and Distributed by
The Zoological Society of Kerala
CMS College, Kottayam, Kerala

Copies: 1000

© Zoological Society of Kerala

Cover Photo: Arjun S.

Cover Design: Creative Minds, Kottayam

Type setting, Layout & Printing:
Alois Graphics, Kottayam
Tel: 2569847 aloisgraphics@gmail.com

Price: ₹ 200/-

ISBN No: 978-81 936818 62

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

ENVIRONMENTAL BIOLOGY AND HUMAN RIGHTS

Editor

Dr. Anila Kumary K.S.

Assistant Professor

Department of Zoology, K.G. College, Pampady

Contributing authors

Dr. Anila Kumary K.S.

Assistant Professor, K.G. College, Pampady

Dr. Maya George

Assistant Professor, Alphonsa College, Pala

Dr. Simimol Sebastian

Assistant Professor, Alphonsa College, Pala

Ms. Cinnei Susan Antony

Assistant Professor, Alphonsa College, Pala

Adv. (Dr.) G. Madhukumar

Principal (Retd.), N.S.S. College, Changanacherry

Dr. Alice M.J.

Professor, (Retd.), St. Teresas College, Ernakulam

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

ZOOLOGICAL SOCIETY OF KERALA TEXT BOOK SERIES

SWADESHI CURRICULUM SERIES

ഭൂമിയിൽ ജീവൻ അഭിമുഖീകരിക്കുന്ന ഏറ്റവും വലിയ ഭീഷണിയാണ് ആഗോളതാപനവും കാലാവസ്ഥാ മാറ്റവും. ഈ വലിയ പ്രശ്നം നേരിടുന്നതിന് സുവോളജിക്കൽ സൊസൈറ്റി ഓഫ് കേരള മുന്നോട്ടു വയ്ക്കുന്ന പരിഹാരമാർഗ്ഗമാണ് സ്വദേശി പാഠ്യപദ്ധതി.

ഉപഭോഗസംസ്കാരമാണ് ഭൂമിയിൽ ചൂട് ക്രമാതീതമായി വർദ്ധിക്കുവാനുള്ള പ്രധാന കാരണം. കോളനിവൽക്കരണത്തിലൂടെ ലോകത്തിന്റെ മിക്ക ഭാഗങ്ങളിലും നിലവിൽവന്ന പാശ്ചാത്യ വിദ്യാഭ്യാസ സമ്പ്രദായമാണ് ഉപഭോഗസംസ്കാരത്തെ ആഗോളവൽക്കരിച്ചത്.

ഭൂപ്രകൃതിക്കും കാലാവസ്ഥയ്ക്കും യോജിക്കുന്ന തരത്തിലുള്ള സ്വദേശീയ വിദ്യാഭ്യാസ സമ്പ്രദായങ്ങൾ, പാഠ്യപദ്ധതികൾ ലോകത്ത് എല്ലായിടത്തും ഉണ്ടായിട്ടുണ്ട്. അവ കണ്ടെത്തി തേച്ച് മിനുക്കി പുനഃസ്ഥാപിക്കുകയാണ് കാലഘട്ടത്തിന്റെ ആവശ്യം. നിലവിലുള്ളതിനെ ഒറ്റയടിക്ക് പുറന്തള്ളുകയല്ല ഇതുകൊണ്ട് ഉദ്ദേശിക്കുന്നത്. സ്വദേശിയും വിദേശിയും വേർതിരിച്ചറിഞ്ഞ് ആരോഗ്യകരമായ അനുപാതത്തിൽ രണ്ടും കൂടി ചേർന്നുള്ള ഒരു പാഠ്യപദ്ധതിയാണ് സ്വദേശി പാഠ്യപദ്ധതി. കേരളത്തിൽ ഉന്നതവിദ്യാഭ്യാസരംഗത്തു ഏറ്റവും ഒടുവിലായി നടപ്പാക്കിയ പരിഷ്കാരം എന്നു വിശേഷിപ്പിക്കാവുന്ന കോഴ്സ് സമ്പ്രദായം ഇത്തരമൊരു മാറ്റത്തിനുള്ള അനുകൂല സാഹചര്യം സൃഷ്ടിച്ചിരിക്കുന്നു. ഇന്നാട്ടിലെ അക്കാദമികസമൂഹത്തിന്റെ ശ്രദ്ധ ഈ വിഷയത്തിലേക്ക് ക്ഷണിക്കുക എന്നതാണ് ഈ പുസ്തകപ്രസാധനത്തിലൂടെ സുവോളജിക്കൽ സൊസൈറ്റി ലക്ഷ്യമിടുന്നത്.

ZOOLOGICAL SOCIETY OF KERALA
REGD. OFFICE: DEPT. OF ZOOLOGY
CMS COLLEGE, KOTTAYAM

ISBN NO: 978-81 936818 62

9 788193 681862

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

ENVIRONMENT MANAGEMENT AND HUMAN RIGHTS

CBCS B. COM SEMESTER V
M.G. UNIVERSITY

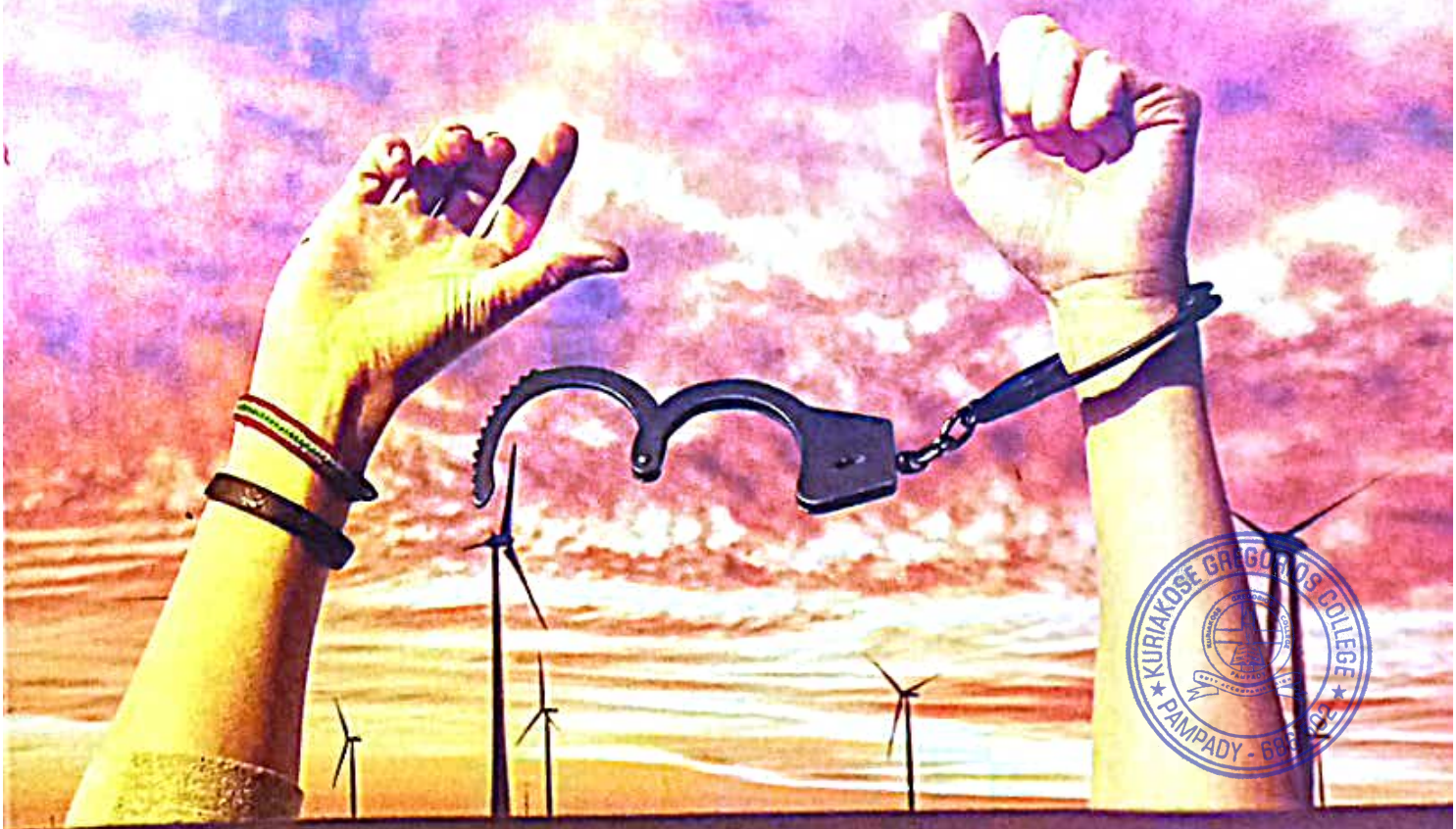

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY

DR. ANILAKUMARY K.S.
DR. VIPIN K. VARUGHESE
LT. RENISH JOSEPH

LEARNERS' BOOK HOUSE, KOTTAYAM

ENVIRONMENT MANAGEMENT AND HUMAN RIGHTS

Applicable for B Com Model I, II and III

CBCS B.Com Programme
Semester V
Core Course 15: (CO5CRT15)
M.G. University, Kottayam

Dr. Anila Kumary K.S.,M.Sc., Ph.D
Assistant Professor & Head, Department of Zoology,
K.G. College, Pampady

Dr. Vipin K. Varughese, M.Com, Ph.D
Assistant Professor in Commerce,
K.G. College, Pampady
Member Board of Studies (UG - Tourism), MG University

Lt. Renish Joseph, MA
Assistant Professor in Political Science,
K.G. College, Pampady

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Learners' Book House
CMS College Road, Kottayam - 686 001
Mob : 9447910419

CBCS B. Com Programme

Semester V

Core Course 15: (CO5CRT15)

ENVIRONMENT MANAGEMENT AND HUMAN RIGHTS

Applicable for B Com Model I, II and III

M.G. University, Kottayam

by

Dr. Anila Kumary K.S

Dr. Vipin K. Varughese

Lt. Renish Joseph

First Edition: July 2020

All rights reserved by the Authors

Printed at

Learners' Press

CMS College Road,Kottayam

Price Rs. 140/-

Get Your Copies From :

Learners' Book House & Ink Pot Designs

CMS College Road,Kottayam- 686 001

Ph : 9447910419, 9447794669

email : inkpotdesigns2018@gmail.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

ENVIRONMENT MANAGEMENT AND HUMAN RIGHTS

CBCS B. COM SEMESTER V
M.G. UNIVERSITY

DR. ANILAKUMARY K.S.
DR. VIPIN K. VARUGHESE
LT. RENISH JOSEPH

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Published by
LEARNERS' BOOK HOUSE, KOTTAYAM
MOB: 9447910419

ISBN 978-81-937033-9-7

9 788193 703397

₹ 140

Dr. S. Manoj
Dept. of Physical Education,
NSS College,
Rajakuman, Kerala

Prof. Praveen Thariyan
Dept. of Physical Education,
SD College, Kanjirapally,
Kerala

Dr. Joji M. Philip
Dept. of Physical Education,
Catholicate College,
Pathanamthitta, Kerala

For Private Circulation

PHYSICAL FITNESS, A COURSE IN HEALTH WELLNESS AND LIFESKILLS

(CBCSS Programme for Undergraduate Level in Kerala, M.G., Calicut & Kannur Universities

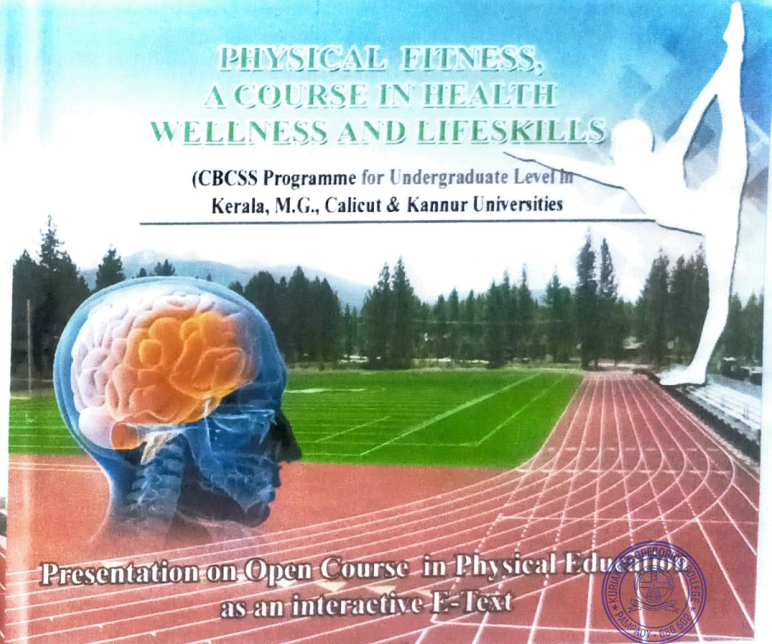

Presentation on Open Course in Physical Education as an interactive E-Text

As per the New CBCSS Syllabus for IIIrd Semester, BBA, of MG University w.e.f. 2017-18

BUSINESS LAWS

P. Saravanavel
P. N. Harikumar
Roy Jose
G. Kavitha

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Himalaya Publishing House
ISO 9001:2008 CERTIFIED

658/1317

BUSINESS LAWS

As per the New CBCSS Syllabus for 3rd Semester, BBA., of M.G. University w.e.f. 2017-18

Prof. P. SARAVANAVEL
M.Com., M.L.,
Member, Bar Council of Tamil Nadu.

Dr. P. N. HARIKUMAR
M.Com, M.Phil, Ph.D (Commerce), MBA (HR & Marketing), Ph.D (Management)
Associate Professor and Head,
Research and Post-Graduate,
Department of Commerce, Management & Tourism,
Catholicate College, Pathanamthitta, Kerala.

ROY JOSE
Assistant Professor
Department of Management Science,
K. G. College, Pampady.

G. KAVITHA
M.A., MBA.
Consultant.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Himalaya Publishing House
ISO 9001:2008 CERTIFIED

© **AUTHORS**

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording and/or otherwise without the prior written permission of the authors and the publisher

First Edition : 2018

Published by : Mrs. Meena Pandey for **Himalaya Publishing House Pvt. Ltd.**, "Ramdoot", Dr. Bhalerao Marg, Girgaon, **Mumbai - 400 004.**
Phone: 022-23860170/23863863, Fax: 022-23877178
E-mail: himpub@vsnl.com; Website: www.himpub.com

Branch Offices :

New Delhi : "Pooja Apartments", 4-B, Murari Lal Street, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi - 110 002. Phone: 011-23270392, 23278631; Fax: 011-23256286

Nagpur : Kundanlal Chandak Industrial Estate, Ghat Road, Nagpur - 440 018. Phone: 0712-2738731, 3296733; Telefax: 0712-2721216

Bengaluru : Plot No. 91-33, 2nd Main Road, Seshadripuram, Behind Nataraja Theatre, Bengaluru - 560 020. Phone: 080-41138821; Mobile: 09379847017, 09379847005

Hyderabad : No. 3-4-184, Lingampally, Besides Raghavendra Swamy Matham, Kachiguda, Hyderabad - 500 027. Phone: 040-27560041, 27550139

Chennai : New No. 48/2, Old No. 28/2, Ground Floor, Sarangapani Street, T. Nagar, Chennai - 600 012. Mobile: 09380460419

Pune : First Floor, "Laksha" Apartment, No. 527, Mehunpura, Shaniwarpeth (Near Prabhat Theatre), Pune - 411 030. Phone: 020-24496323/24496333; Mobile: 09370579333

Lucknow : House No 731, Shekhupura Colony, Near B.D. Convent School, Aliganj, Lucknow - 226 022. Phone: 0522-4012353; Mobile: 09307501549

Ahmedabad : 114, "SHAIL", 1st Floor, Opp. Madhu Sudan House, C.G. Road, Navrang Pura, Ahmedabad - 380 009. Phone: 079-26560126; Mobile: 09377088847

Ernakulam : 39/176 (New No. 60/251) 1st Floor, Karikkamuri Road, Ernakulam, Kochi - 682 011. Phone: 0484-2378012, 2378016; Mobile: 09387122121

Bhubaneswar : Plot No. 214/1342, Budheswari Colony, Behind Durga Mandap, Bhubaneswar - 751 006. Phone: 0674-2575129; Mobile: 09338746007

Kolkata : 108/4, Beliaghata Main Road, Near ID Hospital, Opp. SBI Bank, Kolkata - 700 010. Phone: 033-32449649; Mobile: 07439040301

DTP by : **Sri Siddhi Softtek**
Bengaluru

Printed at M/s. Aditya Offset Process (I) Pvt. Ltd., Hyderabad.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

3rd Semester, B.Com. & BBA of MG University

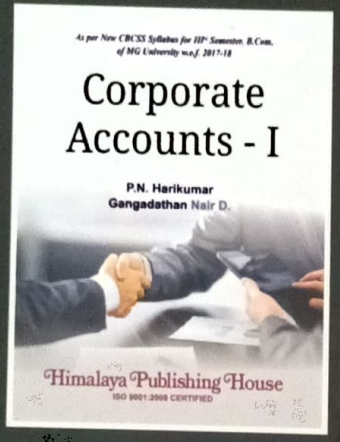

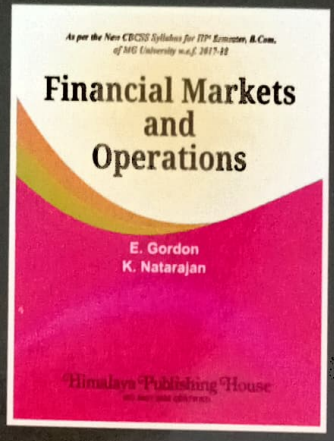

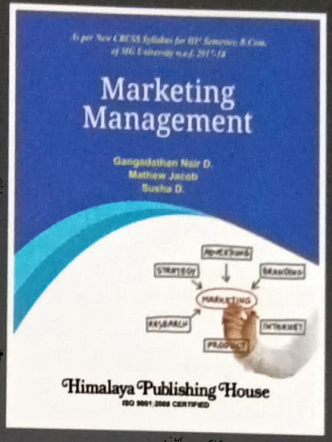

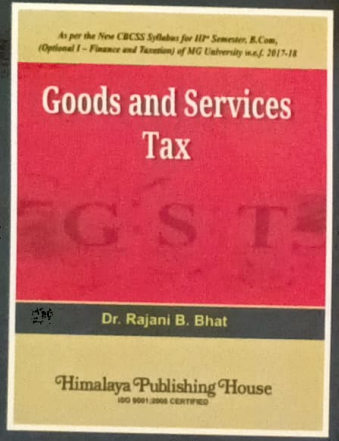

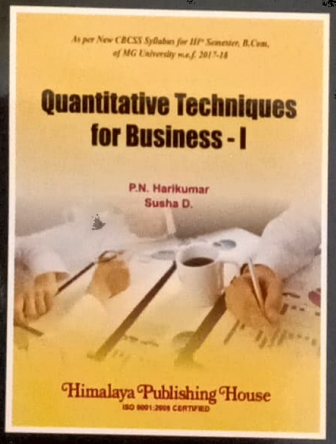

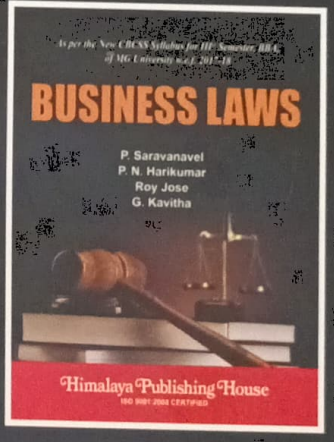

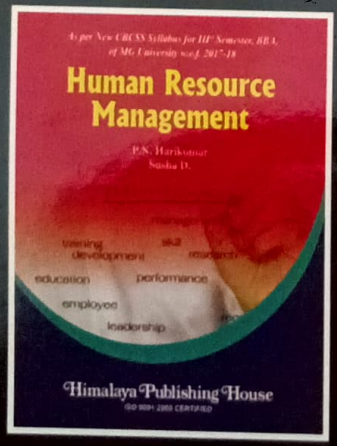

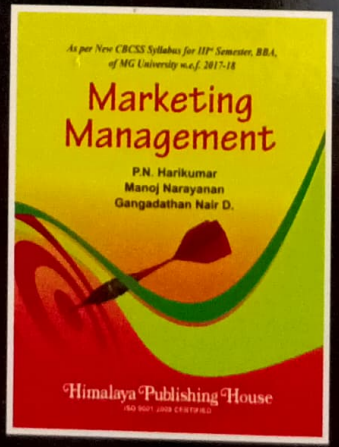

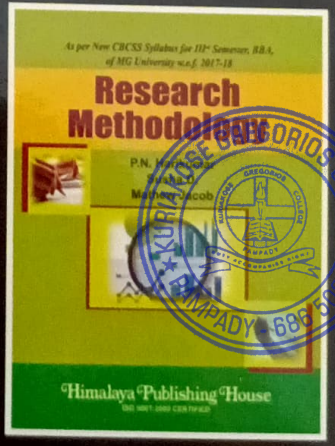

www.himpub.com

ISBN: 978-93-5299-183-9

9 789352 991839

ISBN: 978-93-5299-183-9 PCL 227 ₹ 250/-

As per New CBCSS Syllabus for 1st Semester, BBA of MG University w.e.f. 2017-18

Principles and Methodology of Management

Roy Jose • Sabana Backer
Sharan Hilary

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

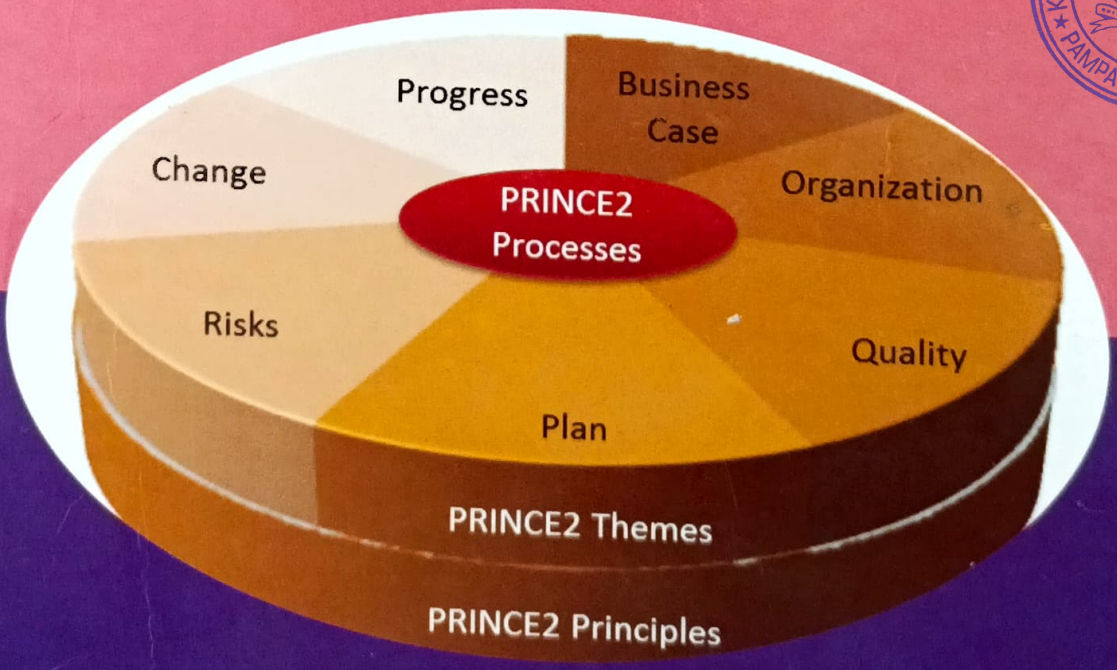

Himalaya Publishing House
ISO 9001:2008 CERTIFIED

PRINCIPLES & METHODOLOGY OF MANAGEMENT

[As per New CBCSS Syllabus for 1st Semester BBA, of MG University w.e.f 2017-18]

658/1254

Roy Jose
Asst. Prof., Department of Management Science,
K. G. College, Pampady.

Sabana Backer
Asst. Prof., Department of Management,
K.M.M College of Arts and Science, Thrikkakara.

Sharan Hilary
Asst. Prof., Department of Commerce,
ST. Alberts College, Ernakulam.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Himalaya Publishing House
ISO 9001:2008 CERTIFIED

1st Semester, B.Com. & BBA of MG University

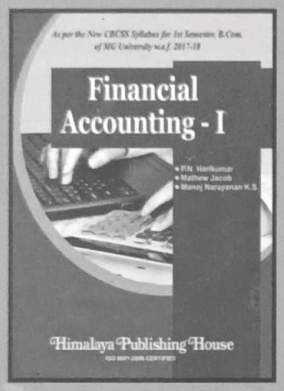

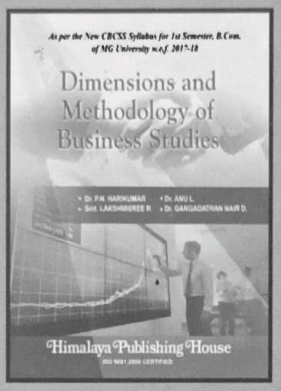

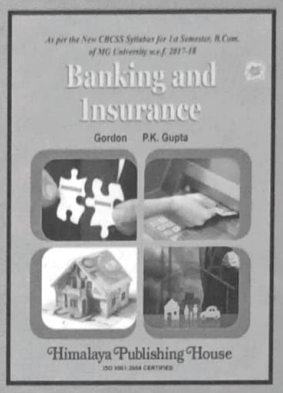

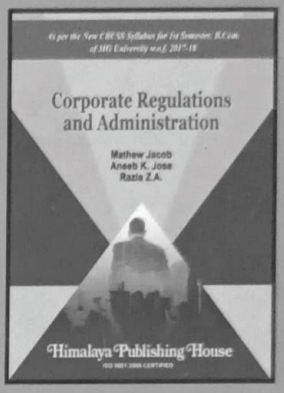

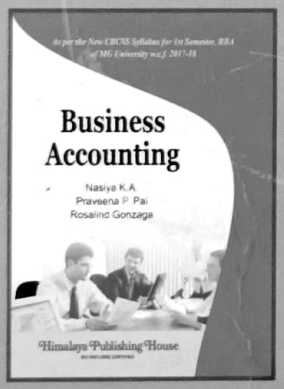

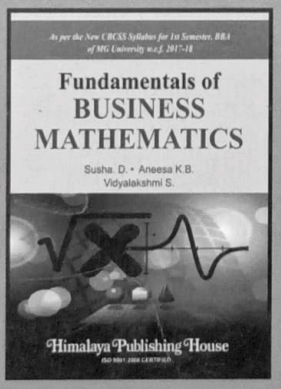

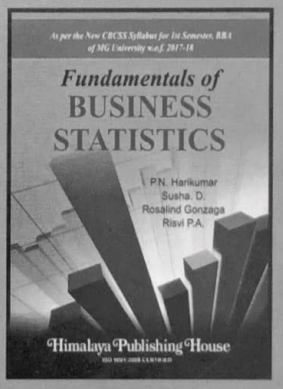

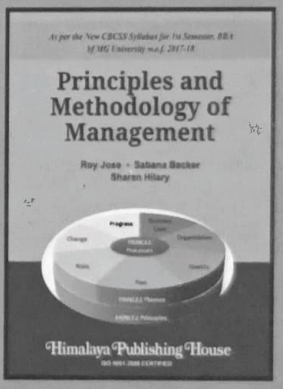

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

www.himpub.com

ISBN: 978-93-5273-429-0

9 789352 734290

ISBN: 978-93-5273-429-0 PCG 757 ₹ 175/-

Mahatma Gandhi University

Saradhi
Publishers & Distributors

BBA semester examiner

Third Semester

HUMAN RESOURCE MANAGEMENT

RESEARCH METHODOLOGY

MARKETING MANAGEMENT

BUSINESS LAWS

With Question Bank Complete Answers

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY 686 502

ROY JOSE

Mahatma Gandhi University

BBA SEMESTER EXAMINER

THIRD SEMESTER

by

Roy Jose

Assistant Professor
Department of Management Science
K.G.College, Pampady

First Published November 2018

© Copyright reserved

No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the Publisher.

Published by

Saradhi Publishers & Distributors

Good Shepherd Street, Kottayam-686 001.
Phone: 0481 2301204, 974 612 3546
saradhipublishersspd@gmail.com

Printed at Print Solutions, Kottayam
e-mail: printsolutionsktm@gmail.com

₹ 200/-

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - KOTTAYAM

Saradhi
Publishers & Distributors
Good Shepherd Street,
Kottayam-686 001

ISBN 978-81-934612-8-0
9 788193 461280 01

എസ്.കെ.പൊറ്റെക്കാട്ട്

സാഹിത്യലോകത്തെ നിത്യസഞ്ചാരി

അനൂപ് കെ.ആർ

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

എസ്.കെ. പൊറ്റെക്കാട്ട്

സാഹിത്യലോകത്തെ നിത്യസഞ്ചാരി

അനൂപ്. കെ.ആർ.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

ലിപി പബ്ലിക്കേഷൻസ്

കോഴിക്കോട് - 673 002

വില: 100 രൂപ

Malayalam

S.K. POTTEKKAD

SAHITHYALOKATHE NITHYASANCHARI

(Biography)

By

ANOOP. K.R

First Edition : April 2018

Rights Reserved

Typeset & Layout by LIPI DTP

Cover Designed : Vijeesh Lipi

Printed at : Geethanjali Offset Prints

CONDITIONS FOR SALE

No part of this publication may be
reproduced stored in a retrieval system
or transmitted in any form or by any means,
without the prior written permission of the publisher.

Price: Rs. 100/-

Publishers

LIPI PUBLICATIONS

Head Office
Al Ameen Building, 13/766- U 6
Rly.Stn. Link Road, Kozhikode - 673002
Tel: 0495-2700321

Showroom

LIPI BOOKS

B-12, Vikas Building, Rly. Stn. Link Road, Kozhikode-2
Tel: 0495-2700192, Mobile: 9847262583
Email: lipipublicationsclt@gmail.com
lipiakbar@gmail.com
www.lipipublications.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

എസ്.കെ പൊറ്റെക്കാട്ട്
സാഹിത്യലോകത്തെ നിത്യസഞ്ചാരി
അനൂപ് കെ.ആർ

മലയാളിയുടെ സർഗ്ഗഭാവനയെയും സഞ്ചാരഭാവനയെയും ഒരുപോലെ തൊട്ടുണർത്തിയ സാഹിത്യലോകത്തെ നിത്യസഞ്ചാരിയാണ് എസ്.കെ.പൊറ്റെക്കാട്ട്. താരപദവി നേടിയ മലയാളത്തിലെ ആദ്യത്തെ ചെറുകഥാകൃത്തായ എസ്.കെ സാഹിത്യത്തിലെ പ്രധാന ആഖ്യാനമേഖലകളിലെല്ലാം തന്റേതായ കൈയ്യൊപ്പ് ചാർത്തി, സഞ്ചാരസാഹിത്യത്തെ സജീവമാക്കുകയും സഞ്ചാരസാഹിത്യം എന്നത് സർഗ്ഗാത്മക പ്രവർത്തനമായി പരിണമിപ്പിക്കുകയും ചെയ്തു. യാത്രയെ ഒരു സാമൂഹികാനുഭവമാക്കിയ എസ്.കെ.യുടെ ജീവിതയാത്രയുടെ അനുയാത്രയാണ് ഈ പുസ്തകം.

ജീവചരിത്രം ₹.100
ISBN 978-81-8802-150-5
9 788188 021505 >

Cover design:
Vijeesh Lipi

ലിപി
പബ്ലിക്കേഷൻസ്
കോഴിക്കോട്

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502
Prof.(Dr.) Renny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502